Case study 1-Vivian Fernandes

http://hindi.moneycontrol.com/mccode/news/print.php?id=84635&sr_no=

भारत में खेती एक ऐसा सेक्टर है, जिसमें नए लोग आने से हिचकते हैं। लेकिन गुजरात में बनासकांठा जिले के आलू उत्पादक किसानों को देखकर लगता है कि हालात बदल रहे हैं। यहां नौजवान खेती करने को व्यापार या उद्योग-धंधों से ज्यादा तरजीह दे रहे हैं।

पालनपुर के पास दीसा में रहने वाले भावेश सैनी ने निरमा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से केमिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। लेकिन किसी कंपनी को ज्वाइन करने की बजाए उन्होंने अपने परिवार की 60 एकड़ जमीन पर खेती करना पसंद किया। वो ठंड के सीजन में आलू उगाते हैं और साल के बाकी सीजन में बाजरा और मूंगफली की खेती करते हैं। वो अपनी आलू की उपज मैक्कैन को बेचते हैं और उन्हें खेती सिर्फ मुनाफा नहीं, खुशी भी देती है।

पालनपुर तालुका में ही रहने वाले सुमित जोशी को खेती करना गार्डेनिंग जैसा महसूस होता है। सुमित एग्रो प्रोडक्ट्स के डीलर थे, लेकिन 2011 में उन्होंने तय किया कि वो वैज्ञानिक तरीके से खेती करेंगे और वो इस फैसले से संतुष्ट हैं।

इकबालगढ़ के कांतिभाई पटेल प्लास्टिक केमिस्ट्री में पोस्ट ग्रेजुएट हैं, लेकिन उन्हें अपने 25 एकड़ खेत में आलू, कपास और बाजरा उगाना पसंद है। उनके खेतों में आलू की उपज गुजरात के औसत से दोगुनी है। वो भी अपनी उपज मैक्कैन को बेचते हैं और रिटेल में एफडीआई को एग्रीकल्चर सेक्टर के लिए बेहतर मानते हैं।

ये नौजवान किसान उदाहरण हैं कि किस तरह गुजरात में कॉरपोरेट और कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग की तरफ लोगों का रुझान हो रहा है।

बनासकांठा जिले के किसानों जैसे समृद्ध और आशावादी किसान कम ही मिलेंगे। ये इस बात की मिसाल हैं कि अगर सरकार क्वालिटी और उपज सुधारने के लिए प्राइवेट एंटरप्राइजेज की मदद ले, निवेश की दिक्कतें दूर करे और किसानों से सीधी खरीद को बढ़ावा दे तो खेती को और ज्यादा फायदेमंद बनाया जा सकता है।